मुख्य बिंदु

प्रश्न : मीरा पर प्रवचन प्रारंभ करते हुए आपने हमें प्रेम के मानसरोवर में नौका-विहार के लिये आमंत्रित किया, हम कृतज्ञ हैं। लेकिन कई मनस्विद कहते हैं कि प्रेम मूलतः जैविक है, जो कि मनुष्य में दमन के कारण मानसिक रूप ले लेता है। मनस्विद यह भी कहते हैं कि कवि, कलाकार और संत ने जैविक प्रेम को ही तूल देकर वायवीय और अलौकिक बना दिया है। ओशो, इस वक्तव्य पर कुछ प्रकाश डालने की अनुकम्पा करें!

मनस्विद जानते क्या हैं? मन को भी नहीं जानते हैं अभी, आत्मा की तो बात ही छोड़ो। मनस्विदों को मनस्विद कहना भी अभी ठीक संगत नहीं है। अभी मनस्विद तो केवल मनुष्य के व्यवहार का अध्ययन कर रहे हैं; अभी मन का अध्ययन शुरू नहीं हुआ। और मनुष्य के व्यवहार का अध्ययन भी अभी ठीक से शुरू नहीं हुआ। मनुष्य के व्यवहार का अध्ययन करते हैं, कहीं चूहों, बिल्लियों, कबूतरों—इनका अध्ययन करके।

यह ऐसे ही है, जैसे कोई फूल का अध्ययन करना चाहे और जड़ों को काट ले और उनका विश्लेषण करे; कोई कमल का अध्ययन करना चाहे और कमल जिस कीचड़ में पैदा हुआ उस कीचड़ को भर लाये घर और उसका अध्ययन करे। यह बात सच है कि मनुष्य के जीवन में जो प्रेम का फूल खिलता है, वह कामवासना की कीचड़ में ही खिलता है, यह बात बिलकुल सच है। मगर वह कामवासना की कीचड़ ही नहीं है—कीचड़ में खिलता है।

लेकिन कमल कीचड़ नहीं है। लेकिन विज्ञान में एक बड़ी भ्रांत धारणा है कि हर चीज को उसके मूल कारण पर ले जाओ। उसे पीछे की तरफ ले जाओ। विज्ञान की यह मान्यता है : कारण समझ लिया तो कार्य समझ लिया। विज्ञान की एक अंधी मान्यता है कि कार्य जो है वह कारण से बड़ा कभी नहीं होता। यह बात झूठ है। यह बात बुनियादी रूप से गलत है।

कार्य अवसर कारण से बड़ा होता है। कीचड़ से ही कमल आता है, यह बात सच है; फिर भी कमल कीचड़ ही नहीं है, कीचड़ से बहुत ज्यादा है। और यह भी सच है कि अगर तुम कमल को जाकर विश्लेषण करोगे विज्ञान की प्रयोगशाला में, तो उसमें से वह फिर कीचड़ खोज लेगा—किन-किन तत्वों से बना है, निकालकर रख देगा। और तब एक आश्चर्य की बात होती है कि सौंदर्य जो तुम्हें दिखाई पड़ा था उस कमल में, वह नहीं मिलेगा फिर। न सौंदर्य मिलेगा, न वह जो निर्दोष कुंआरापन था कमल का, वह जो ताजगी थी कमल की, वह जो आनंद झलक रहा था कमल में—वह भी नहीं मिलेगा। न आनंद कमल का पकड़ में आयेगा, न उसकी ताजगी, कुंआरापन पकड़ में आयेगा, न उसका सौंदर्य पकड़ में आयेगा। कुछ भी पकड़ में नहीं आयेगा। कमल का विश्लेषण करोगे, कीचड़ हाथ लगेगी। लेकिन कमल कीचड़ है?

मनस्विद की भी वही भूल है, क्योंकि मनस्विद अभी विज्ञान के पीछे चलता है—इसी भ्रांति में कि किसी तरह उसका शास्त्र भी विज्ञान हो जाये। यह उसने गलत दिशा पकड़ी है। जीवन में जिन चीजों से मिलकर कुछ बनता है, उन्हीं पर समाप्त नहीं होता। तुम हड्डी-मांस-मज्जा से बनकर बने हो, ो,

निंदा का मनोविज्ञान

लेकिन तुम ज्यादा हो। तुम जानते हो भली-भांति, तुम जब आंख बंद करके बैठोगे तो तुम पाओगे कि न तो तुम हड्डी हो, न मांस-मज्जा हो। तुम चैतन्य हो। यह प्रत्येक की प्रतीति है कि वह चैतन्य है। लेकिन अगर तुम्हारे शरीर को तोड़ा-फोड़ा जाये, तो चैतन्य नहीं मिलेगा। चैतन्य चूक जाता है हाथ से। वह कैसे उड़ जाता है, पता नहीं चलता। वह अदृश्य है। दृश्य का सहारा लेकर टिका है। तुम्हारे शरीर के बिना कहीं मिलेगा नहीं। तुम्हारे शरीर पर पैर जमाये खड़ा है। लेकिन एक दिन शरीर पड़ा रह जायेगा और चैतन्य जा चुका होगा। तब तुम कितना ही खोजो, चैतन्य को न पाओगे। अभी जब कि चैतन्य है, अभी भी अगर डाक्टर पूरा शरीर का छेदन कर डाले, तो भी कहीं चैतन्य को नहीं पायगा। चैतन्य पाया ही नहीं जा सकता, क्योंकि चैतन्य पकड़ा नहीं जा सकता। चैतन्य अनंत है, असीम है।

ऐसा ही मामला प्रेम और काम का है। तथाकथित मनस्विद कहते हैं कि प्रेम तो जैविक वासना है, कामवासना है। ठीक कहते हैं। एक सीमा तक सच कहते हैं। लेकिन उन्हें और पार का कुछ भी पता नहीं कि यह जो कामवासना है, यह रूपांतरित हो सकती है।

तुम ऐसा समझो कि एक वीणा रखी है, और तुमने कभी वीणा नहीं देखी और तुम वीणा बजाना भी नहीं जानते हो—और तुमसे कोई पूछे कि यह वीणा क्या है? तुम क्या करोगे? तुम तार नाप लोगे कि कितनी लम्बाई के तार लगे हैं इसमें। तुम, कितनी लकड़ी इसमें लगी है, वह हिसाब लगा दोगे? इसमें कितना हाथी-दांत लगा है, वह हिसाब लगा दोगे? इसमें क्या-क्या है, कितनी चमड़ी लगी है, उसका हिसाब लगा दोगे? सब हिसाब लगाकर रख दोगे। मगर क्या तुम सोचते हो : इसमें वीणा का हिसाब आ गया? इसमें असली बात तो चूक ही गई कि वीणा में एक संगीत सोया था, जो अगर कुशल कोई होता तो छेड़ देता, तो जग जाता।

जब वीणा से संगीत पैदा होता है, तब संगीत क्या है? तार है? लकड़ी है? हाथी-दांत है? जो संगीत पैदा होता है, वह क्या है? निश्चित, वीणा के बिना पैदा नहीं होता, लेकिन वीणा केवल उसकी अभिव्यक्ति में साधन है; वीणा उसका स्वरूप नहीं है। वह वीणा से कुछ ज्यादा है। वह वीणा पर थोड़ी देर के लिये टिक जाता है। उतरता है किसी आकाश से—वापस आकाश को लौट जाता है। वीणा माध्यम है।

ऐसी ही मनुष्य की जैविक वासना है; वह माध्यम है। उसी में प्रेम उतरता है। जो बजाना जानता है, जिसने काम पर ठीक-ठीक बजाना सीख लिया, उसे राम मिल जाता है। काम की वीणा में ही राम के स्वर उत्पन्न होते हैं।

फिर मनस्विद अध्ययन किसका करते हैं? मनस्विद अक्सर पागलों का अध्ययन करते हैं—विकृत मनोदशाओं का। और तो कोई उनके पास जायेगा भी क्यों?

फ्रायड ने जिंदगी भर विक्षिप्त लोगों का अध्ययन किया और विक्षिप्त लोगों के आधार पर उसने नतीजे निकाले, जिन नतीजों को वह सारी मनुष्यता पर लागू करना चाहता है। यह बात बड़ी बेहूदी है। यह ऐसा ही है कि एक आदमी जमाने-भर के जड़बुद्धि मूढ़ लोगों को इकट्ठा कर ले और उनका अध्ययन करे और फिर अध्ययन का निष्कर्ष आइंस्टीन पर और बर्ट्रेंड रसेल पर भी लगाना चाहे। हम उसे मूढ़ कहेंगे। हम कहेंगे : पहले तुम मूढ़ों का अध्ययन करते हो और फिर मूढ़ों का अध्ययन करके तुम उस अध्ययन को सब पर फैलाना चाहते हो—जो कि मूढ़ नहीं हैं! यह बात अवैज्ञानिक है। यह न्यायोचित नहीं है। फ्रायड ने अध्ययन किया विक्षिप्त लोगों का, और विक्षिप्त लोगों के अध्ययन से उसने पाया कि सारी बीमारियां कामवासना की हैं। और सच पाया। क्योंकि मनुष्य-जाति ने कामवासना को इतना दबाया है, इतना दबाया है, कि लोगों को रुग्ण कर दिया है। वीणा बजाना तो आता नहीं, तो वीणा को ले जा कर खूब गहरे में दबा दिया है, क्योंकि वह घर में रखी रहे तो भी झंझट है। कभी बच्चे छेड़ देते हैं; कभी गिर जाती है तो आवाज होती है; कभी बीच रात में चूहे दौड़ जाते हैं और आवाज कर देते हैं तो नींद टूट जाती है। इस वीणा को घर में रखने से फायदा क्या है? इसे दबा दो। इससे उपद्रव ही होता है।

फ्रायड ने जिंदगी भर विक्षिप्त लोगों का अध्ययन किया और विक्षिप्त लोगों के आधार पर उसने नतीजे निकाले, जिन नतीजों को वह सारी मनुष्यता पर लागू करना चाहता है। यह बात बड़ी बेहूदी है। यह बात अवैज्ञानिक है। यह न्यायोचित नहीं है

अगर संगीत जगाना न आये तो वीणा से उपद्रव ही होता है। तो तुमने वीणा को दबा दिया है। जिससे महा संगीत पैदा होता, उसे तुम दबाकर बैठ गये हो। और उस दबाने के कारण हजार रोग पैदा होते हैं। क्योंकि जीवन में कुछ भी दबाया जायेगा तो रोग पैदा होगा।

जीवन में विकास होना चाहिये—दमन नहीं। और जीवन सतत विकासमान है—ऊपर और ऊपर। अगर तुम रुके तो तुम रुग्ण हो जाओगे। जैसे ही कोई धारा रुकती है, सड़ना शुरू हो जाती है। धारा बहती रहे तो स्वच्छ रहती है।

तो तुम्हारे तथाकथित धार्मिक लोगों ने भी इसमें हाथ बंटाया है—जिन्होंने दमन सिखाया है।

कामवासना के दमन का परिणाम है कि मनुष्य-जाति पागल होती है। फिर पागलों का अध्ययन करते हैं मनोवैज्ञानिक और वे उस अध्ययन को लागू करते हैं सभी के ऊपर। किसी मनोवैज्ञानिक ने मीरा का अध्ययन किया

नहीं, बुद्ध का अध्ययन किया नहीं। और यही असली सबूत हैं मनुष्य के। बुद्ध का अध्ययन हो, मीरा का अध्ययन हो, मन्सूर का अध्ययन हो, इनके अध्ययन से जो निष्पत्तियां मिलेंगी, वे हमें खबर देंगी कि मनुष्य क्या हो सकता है; मनुष्य की संभावना का द्वार खोलेंगी। इसलिए मनस्विदों से सावधान रहना। धार्मिकों से सावधान रहना क्योंकि वे दमन सिखाते हैं। मनस्विदों से सावधान रहना, क्योंकि वे पागलों के द्वारा ली गई निष्पत्तियों को सब के ऊपर आरोपित करते हैं।

दोनों ही गलत हैं। दमन की कोई जरूरत नहीं है। जीवन सहज और सरल हो, मुक्त, निर्बंध! मगर उतना ही काफी नहीं। उतने से तुम स्वस्थ हो जाओगे, रुग्ण नहीं होओगे। मगर स्वास्थ्य काफी नहीं है। अपने-आप में स्वास्थ्य का क्या मूल्य है? स्वास्थ्य का इतना ही मूल्य हो सकता है कि वह साधन बन जाये परमात्मा तक पहुंचने का। निर्बंध, अबाध जीवन की धारा हो तो स्वस्थ होगी। स्वस्थ धारा हो तो फिर सागर की तरफ ले चलो। फिर बहो सागर की तरफ। जिस दिन तुम जानोगे प्रेम को, उस दिन पाओगे कि मनोवैज्ञानिक गलत कहते हैं। जिन्होंने प्रेम का थोड़ा-सा भी अनुभव किया है, वे जानते हैं कि मनोवैज्ञानिक गलत हैं।

लेकिन अड़चनें कुछ हैं। अड़चनें यह हैं कि प्रेम का अनुभव हो तो तुम्हें होता है। इस अनुभव को दुनिया के सामने रखा नहीं जा सकता। और इस अनुभव को दुनिया के सामने रखो तो दुनिया कुछ का कुछ समझेगी। क्योंकि दुनिया वही समझ सकती है जो समझ सकती है—जहां तक दुनिया की समझ है। तुमने कभी कोशिश की? एक छोटे बच्चे को, चार साल के बच्चे को, तुम अगर काम शास्त्र समझाना चाहो वात्स्यायन का, तो नहीं समझा पाओगे, लाख सिर पटको। कैसे समझाओगे? और बिलकुल मत समझाओ। वात्स्यायन के कामसूत्र का पता ही न चलने दो इसको, लेकिन जब यह जवान हो जायेगा और इसकी काम-ऊर्जा पकेगी तो तुम्हारे बिना समझाये भी समझ लेगा।

पशु-पक्षियों को कौन समझाता है? वात्स्यायन की किताब पढ़ते नहीं, खजुराहो के मंदिर जाते नहीं। कौन समझाता है इनको? जब ऊर्जा पकती है तो समझ आती है।

ऐसे ही एक दिन जब प्रेम पकता है तो समझ आती है। मनस्विद ऐसे ही है जैसे चार साल का बच्चा; उसको हम कामवासना नहीं समझा सकते। ऐसे ही मनस्विद है, उसे हम प्रेम का रहस्य नहीं समझा सकते, क्योंकि उसने प्रेम के रहस्य को पकने ही नहीं दिया। पकना तो दूर है, वह तो एक जिद्द मान कर बैठा है कि ऐसी कोई चीज होती ही नहीं। जब होती ही नहीं तो खोज बंद हो गई। फिर इसके बड़े अजीब-अजीब परिणाम होते हैं।

— ओशो

पद घुंघरू बांध

दूसरा प्रवचन, तीसरा प्रश्न

(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)

<u>ध्यानमय जीवन शैली</u>

प्रेम

ध्यान है हृदय में डूबना और जब आप हृदय में डूबते हैं तो प्रेम उत्पन्न होता है। प्रेम हमेशा ध्यान का अनुसरण करता है। और इसके विपरीत भी सच है—यदि आप प्रेम में गहरे डूबें तो ध्यान अनुसरण करता है। और इसके विपरीत भी सच है—यदि आप प्रेम में गहरे डूबें तो ध्यान अनुसरण करता है। वे साथ-साथ चलते हैं। वे एक ही ऊर्जा के रूप हैं, वे दो नहीं हैं। या तो ध्यान करें और आपके जीवन में प्रेम उठने लगेगा, आपके चारों ओर एक विराट प्रेम बहने लगेगा, आप प्रेम से छलकने लगेंगे। या फिर प्रेम करें और आप पाएंगे चेतना का वह गुण जिसे ध्यान कहते हैं, जहां विचार खो जाते हैं, जहां विचारों के बादल आपको अब और नहीं घेरते, जहां नींद का कोहरा जो आपको घेरे रहता था, अब नहीं है—सुबह आ गई है, आप जग गए हैं, आप बुद्ध हो गए हैं।

– ओशो
ध्यान-विज्ञान

A. K. AUTOMATICS
(Manufacturers of Precision Machine, Turned Components and Fasteners)
HISSAR ROAD, ROHTAK-124001 (HARYANA) INDIA
Tel: 01262-248516, 248885, 248999, 265892-5 Fax: 01262-248223 Email: akmicro@ndf.vsnl.net.in